6 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रहा है।

ISBN 978-81-237-9058-9

पहला ईप्रिट संस्करण : 2020

Ghar ki Khoj *(Hindi Original)*

₹ 30.00

ईप्रिट द्रवारा ऑनेट टेक्नो सविसेज प्रा लि

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in



नेहरू बाल पुस्तकालय

घर की खोज

हेमंत कुमार

चित्र

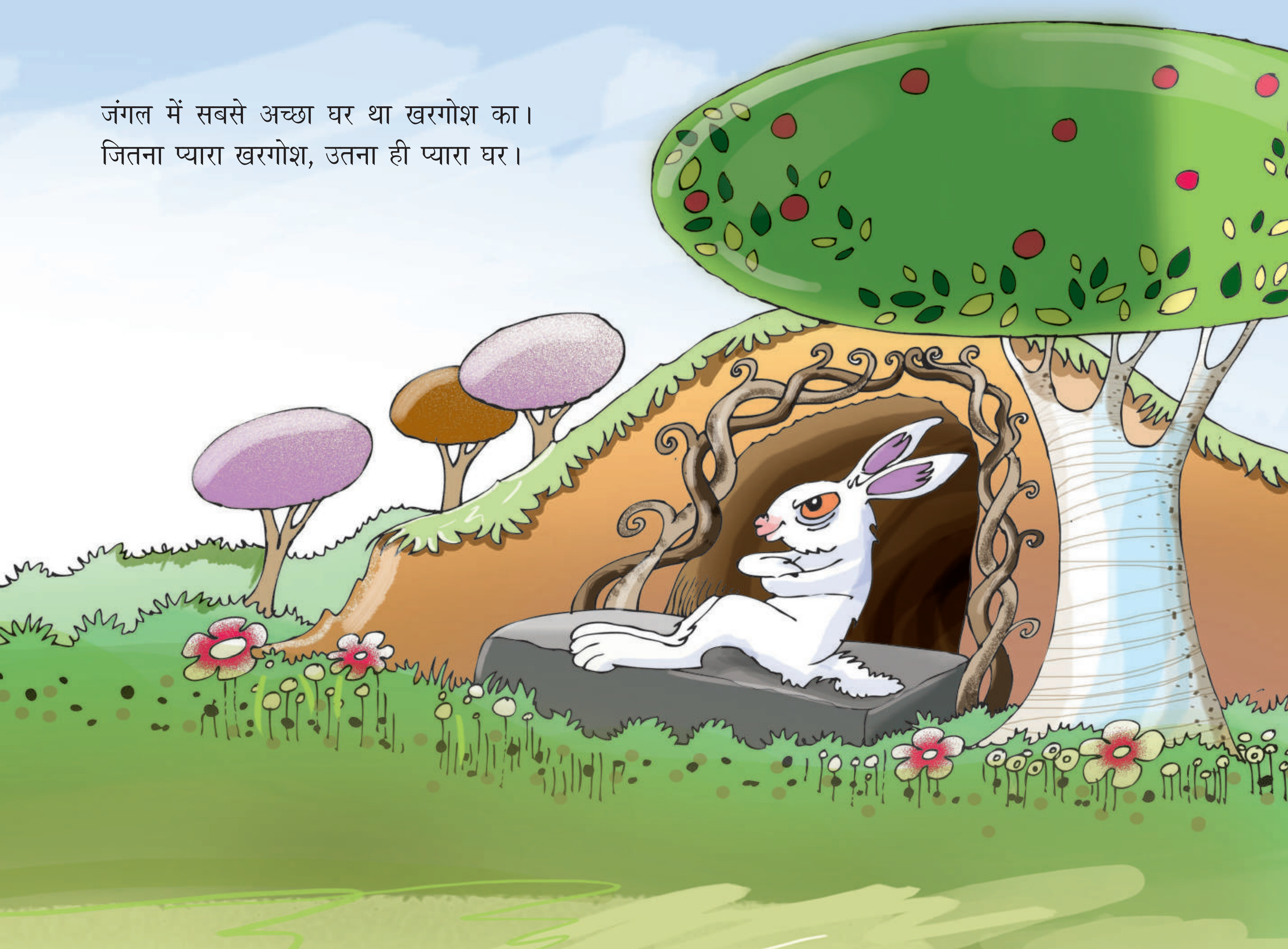
इस्माईल लहरी

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA





जंगल में सबसे अच्छा घर था खरगोश का।
जितना प्यारा खरगोश, उतना ही प्यारा घर।





एक दिन हाथी घूमने निकला। उसने खरगोश का घर देखा। उसे लगा उसका भी घर होना चाहिए, जैसा कि खरगोश का है।

हाथी ने खरगोश से कहा, ''आज से मैं यहीं रहूँगा, तुम्हारे घर में।''

''मेरे घर में? लेकिन यह तो बहुत छोटा है।'' चुनमुन चौंक कर बोला।

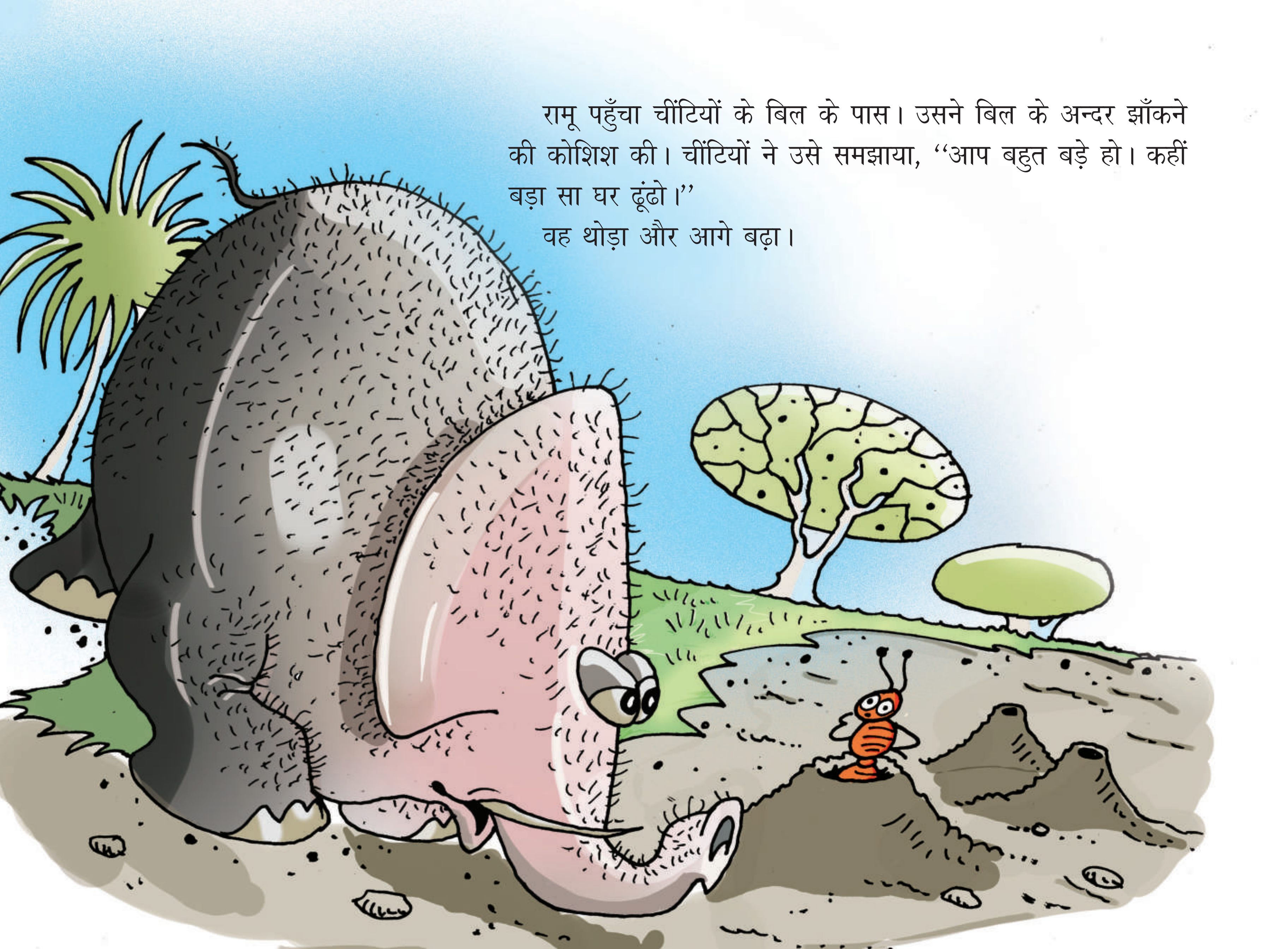
हाथी ने खरगोश के घर को फिर ध्यान से देखा। एक बार बायीं ओर से, दूसरी बार दायीं ओर से। उसे बात कुछ समझ में आई।

वह सूंड हिलाता हुआ आगे बढ़ गया।

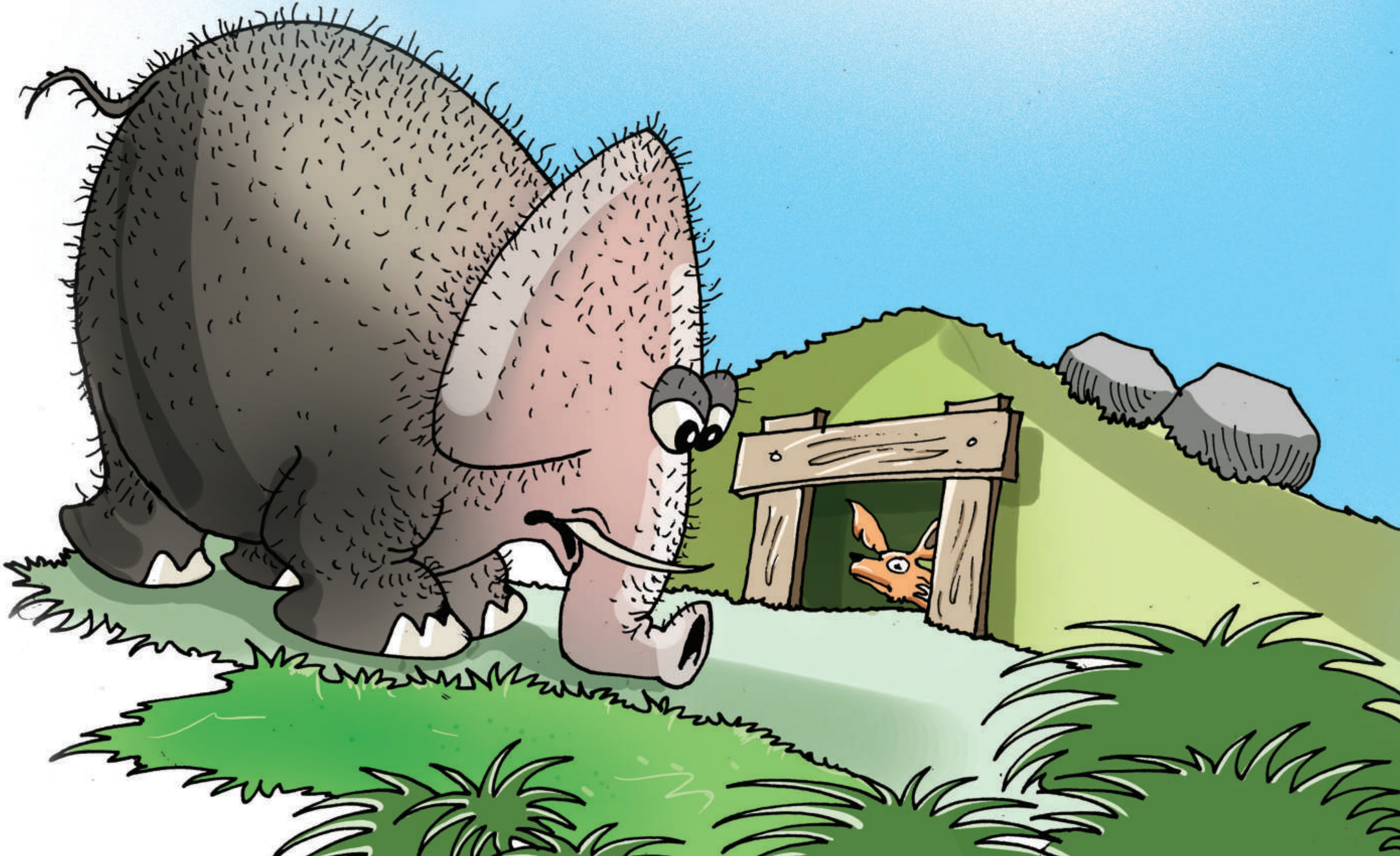


रामू पहुँचा चींटियों के बिल के पास। उसने बिल के अन्दर झाँकने की कोशिश की। चींटियों ने उसे समझाया, ''आप बहुत बड़े हो। कहीं बड़ा सा घर ढूंढो।''

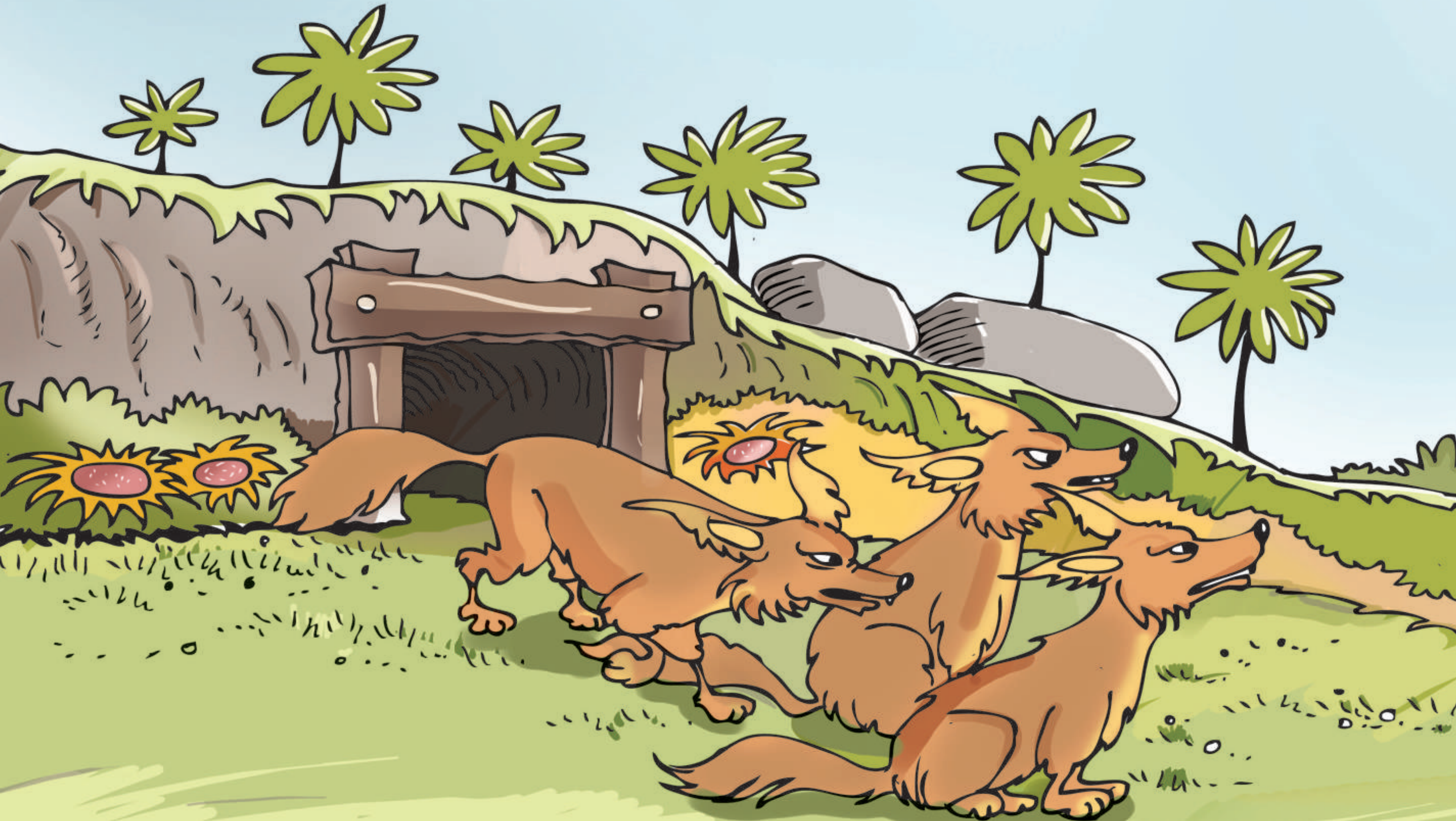
वह थोड़ा और आगे बढ़ा।



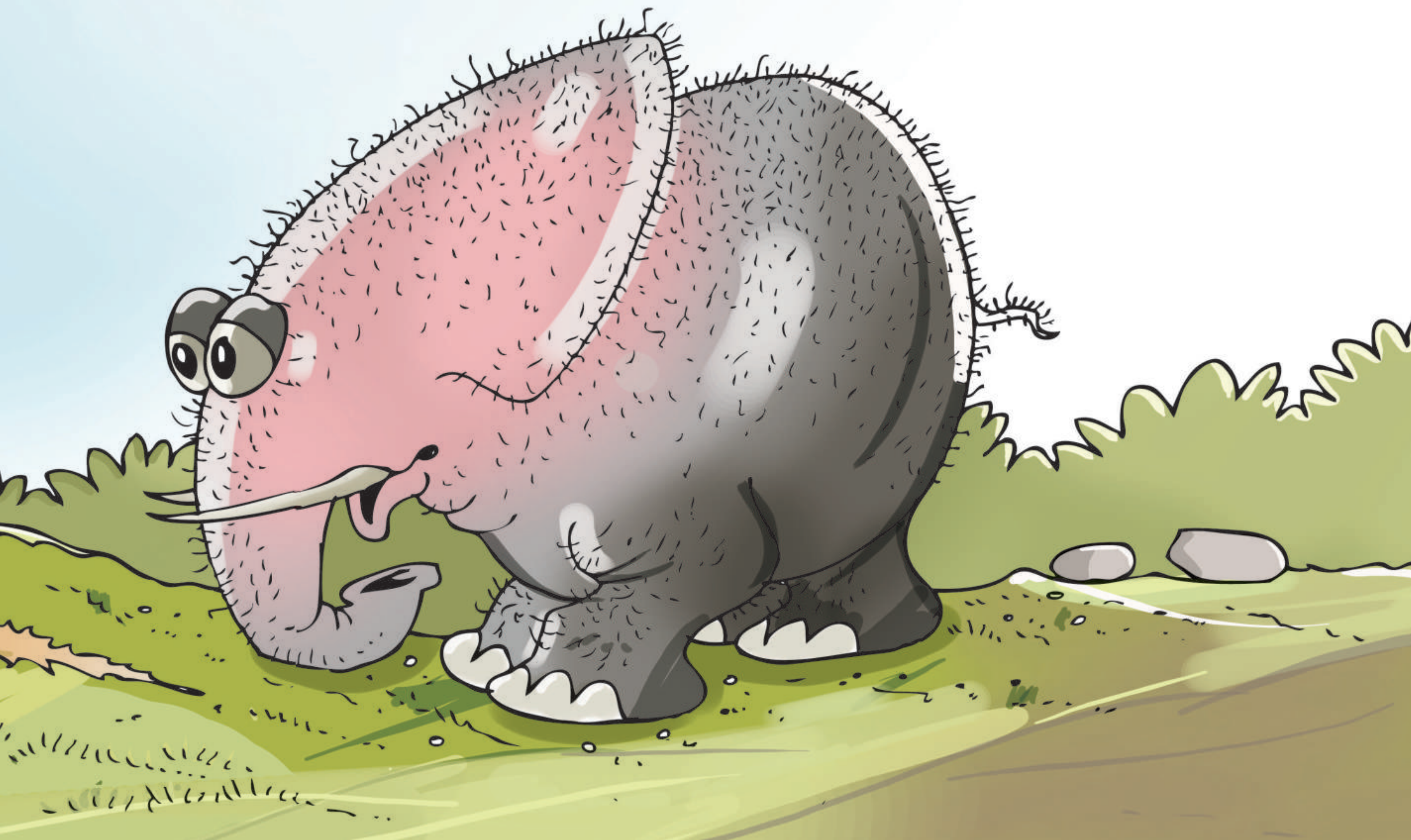
सियार की मांद हाथी को काफी बड़ी लगी। हाथी ने मांद के चारों ओर चक्कर लगाया। पर वहाँ भी उसकी दाल नहीं गली।



सियारों ने उसे समझाया, ''भइया, आप काफी मोटे हो, कोई बड़ा घर ही खोजो।''



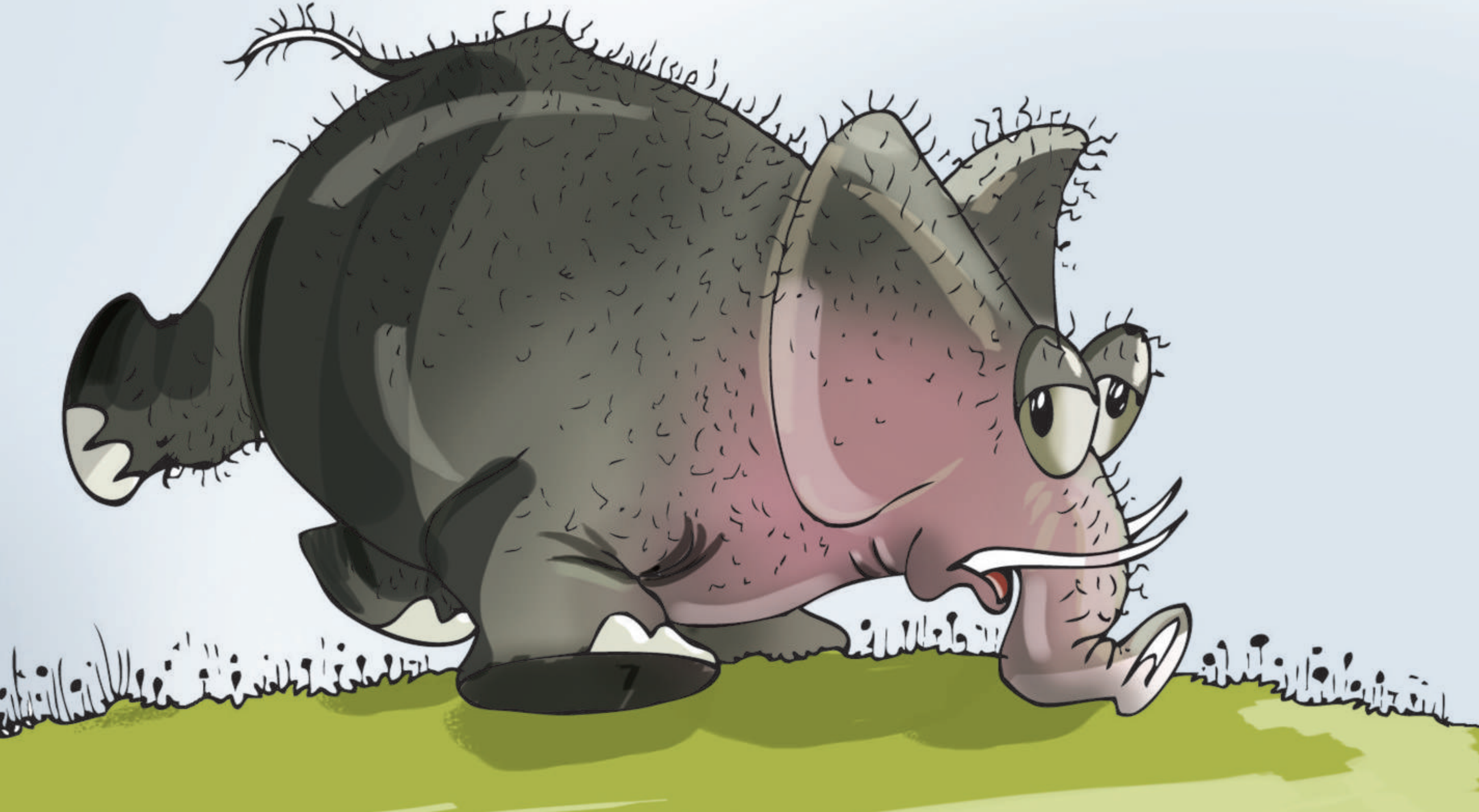
रामू ने गुस्से से मुँह बिचकाया, पैर पटका और आगे बढ़ गया।





हाथी पहुँचा एक घने पेड़ के नीचे। अपने शरीर को पेड़ के तने से खुजाने लगा। बया ने घोसले से झाँककर रामू को देखा और बोली, ‘‘दादा, मुझे तंग मत करो। सोने दो।’’

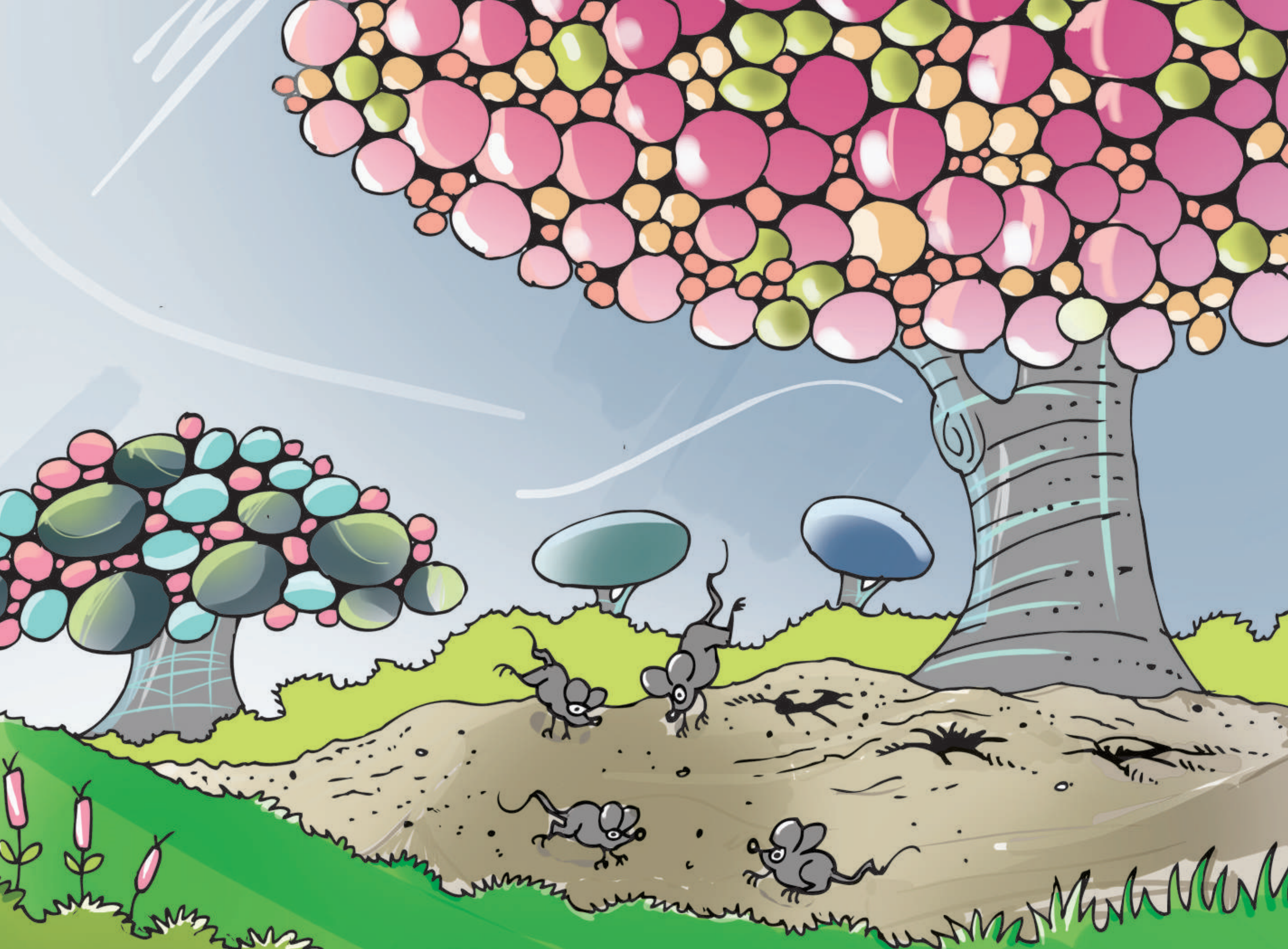
‘‘कोई मुझे अपना घर देना नहीं चाहता। मैं एक-एक से बदला लूँगा।’’ हाथी गुस्से में बुदबुदाया। वह आगे चला दिया।



हाथी ने देखा कुछ छोटे चूहे बिल के बाहर खेल रहे हैं।

“हुंह...बिल भी कोई रहने की जगह है।” उसने सोचा और अपने बड़े-बड़े कान हिलाता हुआ वहाँ से चल दिया।

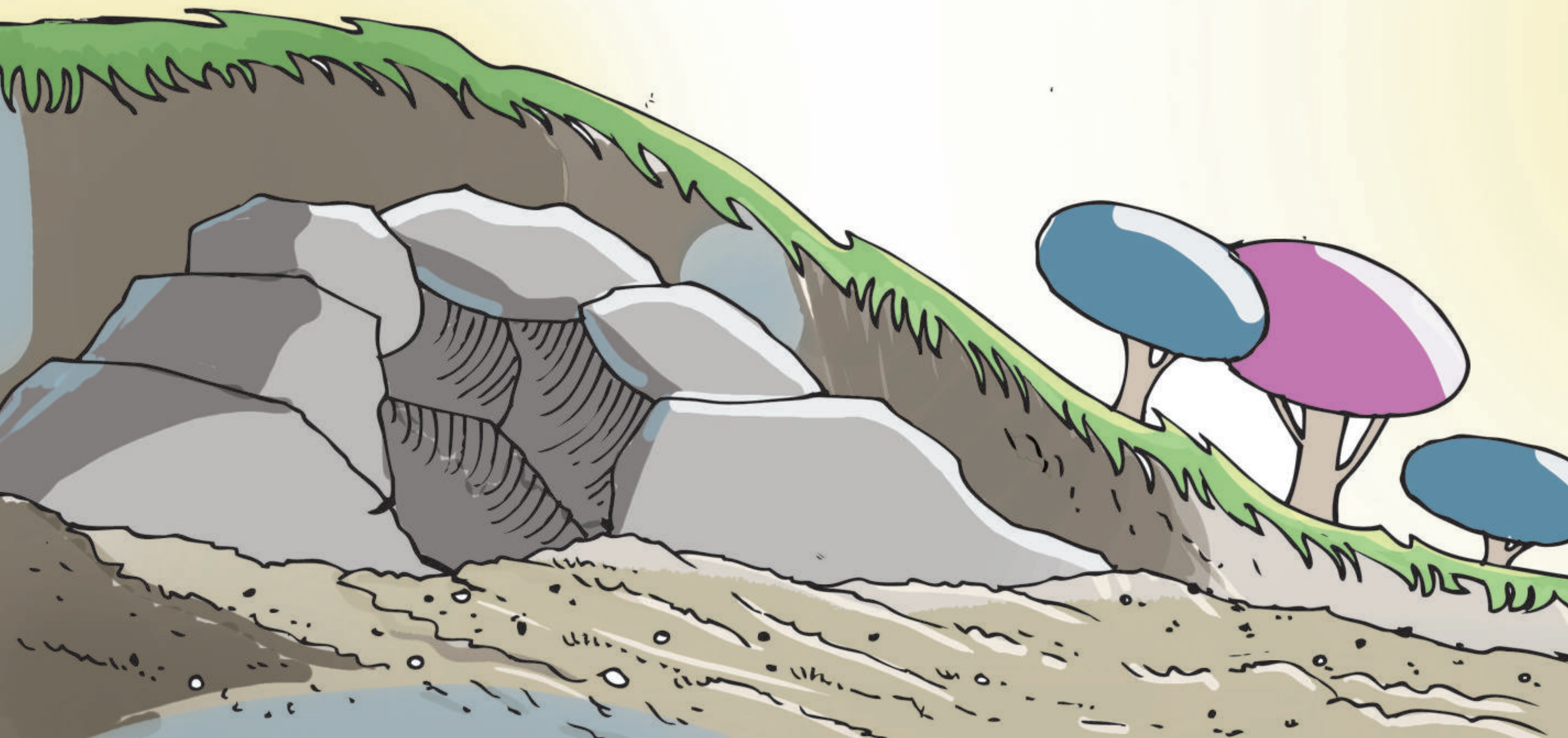


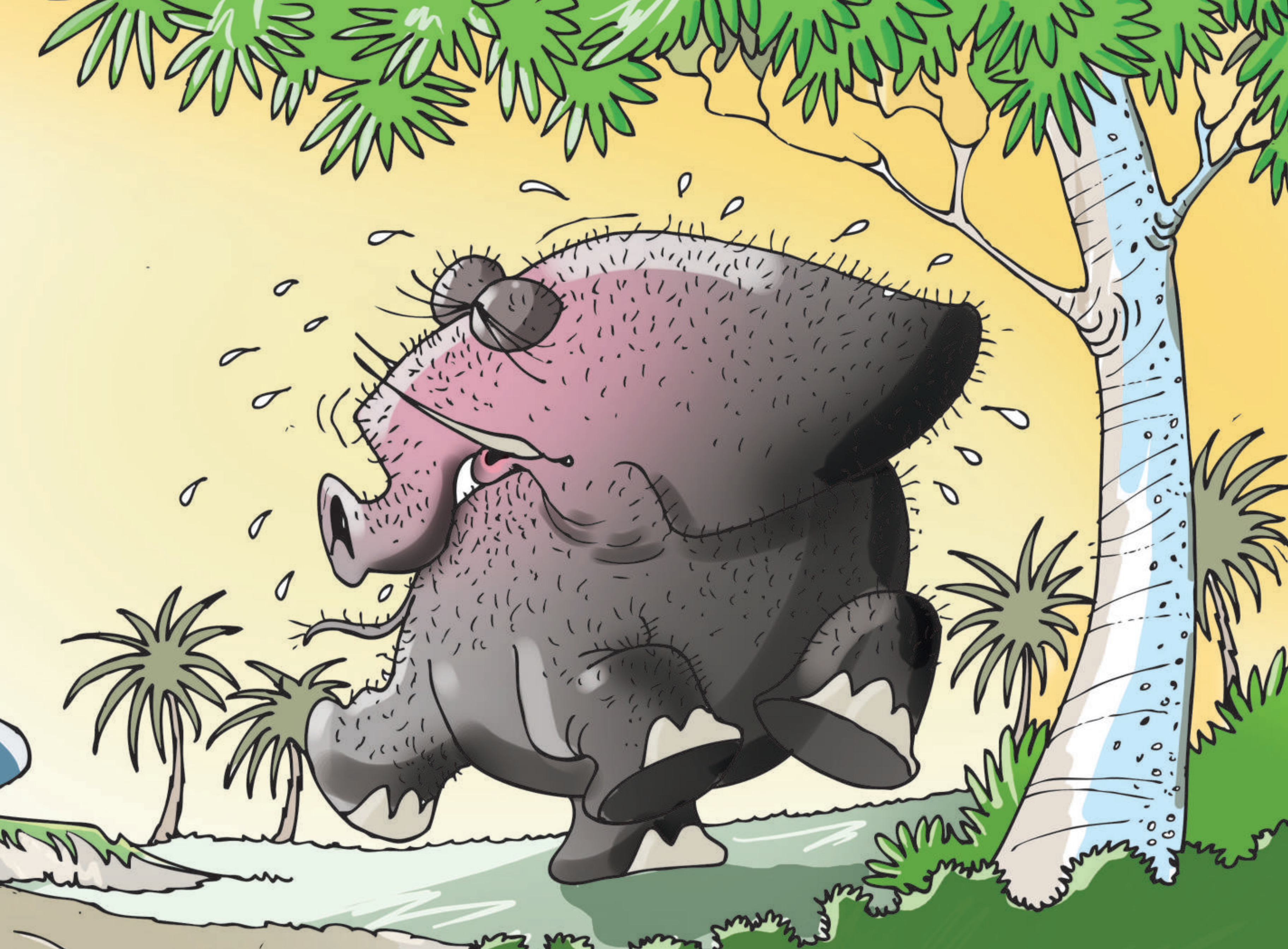


अब हाथी ने सोचा शेर तो बड़ा होता है। क्यों न उसका भी घर देख लिया जाए। हाथी चल पड़ा शेर की गुफा की ओर। गुफा खाली थी। हाथी को लगा कि मौका अच्छा है।

वह तेजी से गुफा के अन्दर घुसा। पर यह क्या? गुफा में उसकी पीठ फँस गयी। अब न वह आगे जा पा रहा था न पीछे। बहुत कोशिश करने के बाद वह किसी तरह से बाहर आया।

बाहर आकर उसने खुली हवा में साँस ली। अपना पसीना सुखाया।





अब हाथी समझ चुका था कि उसका घर खुले मैदान में ही है। वह चल पड़ा नदी की ओर अपनी थकान मिटाने के लिए।



हेमंत कुमार वैसे तो टी.वी. और रेडियो के लिए शैक्षिक कार्यक्रम बनाने के लिए जाने जाते हैं, लेकिन वे बाल मन को गहराई से जानते हैं। 40 से अधिक बाल पुस्तकों के लेखक हेमंत जी को उनके लेखन के लिए कई लब्ध पुरस्कार भी मिले हैं।

इस्माईल लहरी बीते चार दशकों से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए बनाए गए कार्टून के माध्यम से आम लोगों में बेहद लोकप्रिय नाम हैं। श्री लहरी ने राज्य संसाधन केंद्र सहित कई संस्थाओं के लिए पुस्तकों के चित्र भी बनाए हैं।

एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित

